रविवार, दिनाँक 29-10-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जय सीता राम जी

सब ठीक हो?

हाँ जी।

तो फिर अब से प्रसन्नचित्त रहना है। ऐसा ही हो उसके लिए आप सबके लिए बनता है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुसार अपने मन को सदा एक अवस्था में साधे रखो। जब एक अवस्था में साधने की बात आती है तो हर इन्सान के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह खुद पर कड़ा पहरा रखे ताकि जगत में विचरते समय जो बैहरुनी वृत्तियाँ होती हैं व जिनके प्रभाव से भिन्न-भिन्न प्रकार की परिस्थितियाँ बनती हैं, वह परिस्थितियाँ हमारे मन की समरसता को कदापि तंग न कर सकें। याद रखो सजनों जब हम ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में सफल हो जाते हैं तो ही हम अपने सजन कहला पाते हैं अन्यथा नहीं। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि ऐसी स्वतन्त्रता सुनिश्चित करने पर ही हमारा मन सदा एक स्थिति में रह पाता है और ख़्याल-ध्यान प्रकाश वल स्थिरता से सधा रहता है। परिणामतः आत्मज्ञान प्राप्त कर हम अपने हृदय को पुनः प्रकाशित कर आत्मदर्शन करने में सफल हो जाते हो। इसके विपरीत यदि हम ऐसा सुनिश्चित नहीं करते तो जीवन में पल-पल बदलती परिस्थितियाँ हमारी मनोस्थिति पर हावी हो जाती है और हम संकल्प-विकल्प के चक्र-व्यूह में उलझकर अपना इतना कुछ बिगाड़ बैठते हैं कि जिसका जिक्र करना भी नामुमकिन है। अतः हमें सतर्क रहना है। जैसे ही कोई परिस्थिति हावी होने लगे, तत्क्षण सावधान हो जाना है यानि विचार में आ जाना है। क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार कह रहा है कि विचार है जीत और अविचार है हार।

यहाँ प्रश्न उठता है कि विचार पर इन्सान स्थिर कैसे रह सकता है? - उसके लिए कुदरत ने मानव रूप में हमें जिस विशेष शक्ति से नवाज़ा है, हमे उसको जानना-पहचानना है और उसके प्रयोगात्मक रूप को समझना है। इस हेतु सजनों

जीवन में बनने वाली हर परिस्थिति के औचित्य को समझ विवेकशीलता से निर्णय लेना है ताकि हमारा मन सदा हर पल, हर क्षण एक अवथा में सधा रहे और हमें सर्व एकात्मा का, एकता का आभास हो जाए। इस तरह हमारे अन्दर से हर प्रकार का द्वि-द्वेष समाप्त हो जाए। यह होता है सत्य को जानना और तद्नुकूल सत्यनिष्ठा से जीवन में आगे बढ़ना। जानो ऐसा करने से हमारे जीवन का रास्ता सुगम और सरल हो जाता है और मन संकल्प-रहित हो जाता है। अब जहाँ संकल्प-रहित अवस्था होती है, वहाँ सत्य सदा प्रकाशित रहता है यानि ख़्याल सतवस्तु में ठहरा रहता है। इसके विपरीत अगर हम ऐसा नहीं करते तो यह अपने साथ आप वैर कमाने की बात होती है। अतः कुदरत ने जिस विशेष शक्ति से आपको नवाज़ा है उसका जीवन के हर कदम पर इस्तेमाल करने वाले बनो। अगर ऐसा नहीं किया तो जिस प्रकार किसी वस्तु का इस्तेमाल न करने से उसे जंग लग जाता है और वह किसी काम की नहीं रहती, उसी तरह हम भी इस शक्ति का इस्तेमाल करने के योग्य नहीं रहेंगे। याद रखो जो अपनी इस शक्ति से अपरिचित होकर कदम-कदम पर अवविचार के रास्ते पर आगे बढता है यानि बैहरुनी वृत्ति अनुसार ही सब कुछ करना आरम्भ कर देता है उसका ख़्याल अपने सच्चे घर से बाहर निकल जाता है। परिणामतः उसे हर तरफ से धिक्कार मिलती है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों जीवन में जो भी परिस्थिति आए यानि जो भी अच्छा-बुरा घटित हो, उसका समय रहते ही विवेचन करना है यानि विवेकशीलता से उसकी गहराई मे उतर जाना है। इस तरह कदम-कदम पर विचार पकड़ यथार्थ को खोज निकालना है। जानो ऐसा करने पर ही हमारा मन व ख़्याल यथार्थता से परिपूर्ण रहेगा यानि आत्मशक्ति से परिपूर्ण हो प्रभु में लीन रहेगा और हम सदा सर्व-सम्पन्न व आत्मतुष्ट रहेंगे। इसके विपरीत याद रखो कि जहाँ अविचार होता है, वहाँ मन की कठिन अवस्था होती है। कठिन अवस्था के तहत् इन्सान कठिन, कठोर और दुर्बल हो जाता है जोकि अपने आप में दुर्भाग्यशाली होने की बात होती है। इस दुर्भाग्य को प्राप्त कर इंसान नानाविध् रोता और चिल्लाता है तथा त्रेता और द्वापर की कहानियों को याद कर, कलियुग के स्वभाव में या प्रभाव में फँसा रहता है। इस तरह वह कभी सम-अवस्था में नहीं रह पाता

और जीवन में जो भी करता है वह अविवेकशीलता से तथा नीति-नियम के विरूद्ध अधर्मसंगत करता है। इस बात को समझते हुए सजनों आपने जीवन का कोई भी फैसला, किसी के स्वभाव, दबाव या प्रभाव में आकर नहीं लेना क्योंकि यदि एक बार आपने अपने किसी प्रिय के दबाव में आकर यह गलती कर ली या आप उसकी चँगुल में फँस गये तो आपकी कार्यप्रणाली कमज़ोर पड़ जाएगी। फिर आप अपने आप को चाहे कितना ही उच्च बुद्धि क्यों न समझो परन्तु आपने जो करने के निमित्त अपने आप को समर्पित किया है, वह कदापि सिद्ध नहीं कर पाओगे। इसलिए हमारी सबसे प्रार्थना है कि ऐसा सुनिश्चित करने में समर्थवान बनो और ऐसी समर्थता से करो कि उसका सन्देश जन-जन तक पहुँच जाए। हम यह प्रार्थना सर्वहित के लिए इसलिए कर रहे हैं क्योंकि अब कुछ समय पश्चात अठारह दिसम्बर से चालीसे के यज्ञ का शुभारम्भ होने वाला है। अतः अभी से अपने मन को एक अवस्था में साधने के प्रति इस तरह से सतर्क हो जाओ कि कामयाबी आपके कदम चूमे। यह विजय आपके जीवन-विजयी होने का हेतु बनेगी। अतः अब अपने ख़्याल को हर तरफ से समेटकर एक अवस्था में ले आना। इसके प्रति कदाचित् कमज़ोर मत पड़ना यानि अपने साथ न्याय करना, अन्याय मत करना अन्यथा अन्याय करने वाले को तो दण्ड मिलता ही मिलता है। यह दण्ड न भोगना पड़े इस हेतु समझदार बनो और अपनी औलादों को भी समझदार बनाओ। आशय यह है कि समझदार बनने का पहले खुद आदर्श स्थापित करो। तभी आपकी भावी पीढ़ी भी समझदार बनेगी और आप उनके सजन बन पाओगे वर्ना नहीं। अतः चालीस दिनों की अभी से आपको तैयारी करनी है और इस हेतु अपने मन को हर हाल में एक अवस्था में साध कर रखना है। याद रखो परिस्थितियाँ तो आपको कमज़ोर करने की कोशिश करेंगी पर आपने चौबीस घन्टे अपने ऊपर पहरा देना है ताकि किसी भी परिस्थिति में आपके मन पर दुष्प्रभाव न पड़े और मन ऐक्य-भाव में सधा रहे। याद रखो ऐक्य-भाव है तो ख़्याल अपने आप एक दर्शन में ठहरा रहता है। एक दर्शन होता है तो एकाग्रवृत्ति होती है और एकाग्रवृत्ति होती है तो आत्मज्ञानी बनना कोई कठिन कार्य नहीं रहता। याद रखो आत्मज्ञानी ही अपने जीवन का राज़ जान पाता है और उसका अपने

जीवन के प्रति मोह भी समाप्त हो जाता है। इस तरह जीवन मुक्त हो वह प्रकाश नाल प्रकाश हो अपने स्वरूप को पा जाता है। अब आगे ध्यान से भजन सुनोः-

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

इस भजन द्वारा आपको समझ आ गया होगा कि सच्चेपातशाह जी ने जितने भी देवी देवता हैं या कलियुग की प्रथा के अनुसार गुरु बने हुए हैं उन सबको छोड़कर अपने मन की लगन केवल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के साथ जोड़ने का निश्चय क्यों कर लिया? यह होता है सजनों उन सर्वमहान के सर्वश्रेष्ठ गुणों से परिचित हो विवेकशीलता से सर्वहित की खातिर फैसला लेना। यह तरीका हर मानव के लिए कदम-कदम पर अपनाना अत्यन्त आवश्यक है ताकि कोई भी इन्सान छल करके हमें किसी विध् भी बहका न सके यानि हमें भ्रमित बुद्धि बनाकर कर्म-काण्डों में फँसाते हुए अपने अधीन न कर सके। यह है सच्चेपातशाह जी का स्वतन्त्र बुद्धि, स्वतन्त्र अवस्था में निरन्तर विवेकशीलतापूर्ण से बने रहने का फैसला। इस संदर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी ने जान लिया व पहचान लिया कि कुदरत के वाली ने सर्वमहान व सबसे श्रेष्ठ महाबीर जी को ही कलुकाल का विध्वंस कर, इस धरा पर पुनः सतयुग की स्थापना का बेड़ा सौंपा है। अतः उन्होनें उन्हीं के साथ अपनी लगन लगाई। हमारे लिए भी सजनों यही बनता है कि हम अपने अपने मन की लगन किसी भी कमज़ोर के साथ लगाने के स्थान पर सीधा उनके साथ लगाएँ। यह होता है निःस्वार्थ भावना से अपना सजन बनना। याद रखो सजनों इच्छाओं की पूर्ति हेतु इधर-उधर भटकना स्वार्थपरता की निशानी होती है। ऐसा करने पर हम अन्यों के अधीन हो जाते हैं और भूलवश घाटे का सौदा कर बैठते हैं। ऐसा न हो इस हेतु सजनों सच्चेपातशाह जी की तरह यानि एक विवेक बुद्धि इन्सान की तरह अपनी लगन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के साथ लगाने का दृढ़-निश्चय लो। जानो यही निष्काम प्यार है, यही निर्मल प्यार है, यही सुरत और शब्द का, आत्मा-परमात्मा का प्यार है। इसी प्रकार सुरत और शब्द दोनों इस जगत में परमात्म स्वरूप होकर विचरते हुए एकता पूर्ण आचरण का प्रदर्शन कर सकते हैं और सबको जना सकते हैं कि कि हम और कुछ नहीं अपितु ब्रह्म ही हैं। जानो यह यथार्थता को जानने-पहचानने और निर्विकारी जीवन जीने के योग्य बन परमात्म नाम कहाने की कल्याणकारी बात है। ऐसा इन्सान ही स्वतन्त्र बुद्धि इन्सान होता है। अतः कुछ बनना चाहते हो तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के विचारों को धारण कर ऐसे महान इन्सान बनो

और अपनी अलग व्यावहारिक पहचान बनाओ। जानो ऐसा करने का अभी आपके पास मौका है। मत भूलो कि जो मौका होते हुए भी उसका परिपूर्णतया लाभ नहीं उठाता यानि कमज़ोर पड़ जाता है, ऐसा महा दुर्बुद्धि इन्सान न केवल इस जन्म में अपितु जन्म जन्मांतरों तक कलुकाल के प्रभाव में बना रहता है और दुःख अवस्था को प्राप्त होता है। इस तरह वह चौरासी लाख योनियों का दुःख भोगता है। तो क्या यह दुःख खरीदना समझदारी की बात है? या अपने स्वरूप को प्राप्त होकर प्रकाश नाल प्रकाश होने में समझदारी है?

मत भूलो सजनों हमें अपनी वास्तविक शान को प्राप्त करना है और यही हमारे जीवन का प्रथम लक्ष्य है क्योंकि हम सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से जुड़े हुए हैं। अतः हमें अपने ख़्याल-ध्यान को उनके विचारों से जोड़े रखने का सामर्थ्य दिखाना है और अपने अन्दर अन्तर्घट में छाये हुए कलुकाल को विध्वंस कर अपना घर सतयुग बना लेना है। यही जीवन-विजय है। अब आगे सुनोः-

सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी सजनों को कह रहे हैं।

राम नाम रूपी रंग के मालिक शहनशाह हनुमान जी हैं।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

ओ रंग हनुमान जी प्यारे दे कोल, ओ रंग किसे दे कोल नहीं।

ओ रंग किसे दे कोल नहीं, ओ रंग किसे दे कोल नहीं।।

ओ३म् ओ रंग सब नूं चढ़ाई जांदा।

जिन्हुं चाह होई साडे मिलने दी, ओन्हुं दर्शन साडे करवाई जांदा।।

जेहड़ा शरणी हनुमान जी दी आ ही गया, इलाही रंग उसनूं चढ़ा ही दिया।

रंग चमके चमकारे मारे ओ रंग, ओ३म् रंग चानणा सब नूं दिखाई जांदा।।

जिन्हुं चाह होई साडे मिलने दी, ओन्हुं दर्शन साडे करवाई जांदा।

ओ रंग हनुमान जी दा निराला है, मस्ताना मस्ती दिखावन वाला है।।

रंग लिश्के लिश्कारे मारे ओ रंग, ओ३म् ओ रचना सब नूं दिखाई जांदा।

जिन्हुं चाह होई साडे मिलने दी, ओन्हुं दर्शन साडे करवाई जांदा।।

ओहदे रंग दा अजब लिश्कारा है, ओ बक्षंद रंग बक्षण वाला है।

रंग झलके झलकारे मारे ओ रंग, ओ३म् ओ झलकां सब नूं दिखाई जांदा।।

जिन्हुं चाह होई साडे मिलने दी, ओन्हुं दर्शन साडे करवाई जांदा।

रंग लिया हनुमान जी साडे द्वारे उत्ते, चानणा पौंदा ओहदा कुल सारे उत्ते।।

रंग अजब ओ खेल दिखावे रंग, ओ३म् बिन सूरजों ओ चनणा दिखाई जांदा।

जिन्हुं चाह होई साडे मिलने दी, ओन्हुं दर्शन साडे करवाई जांदा।।

जिन्हुं होई ए इलाही रंग दी चाह, ओ रंग हनुमान जी दे कोल सारा।

ओ रंग सब नूं करे दंग ओ रंग, ओ३म् बिन नामों प्रकाश दिखाई जांदा।

जिन्हुं चाह होई साडे मिलने दी, ओन्हुं दर्शन साडे करवाई जांदा।।

इस कीर्तन दारा कलुकाल के इन्सानों को पुनः जागृति में लाने के लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की अपार महिमा का वर्णन करते हुए कुल ब्रह्माण्ड को बताया गया है कि जो रंग सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के पास है, वह अन्य किसी के पास नहीं। इसका सीधा सा मतलब है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त कर लो और अपनी मन-बुद्धि को किसी अन्य के हवाले मत करो। जानो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हर मानव को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार जो जीवन व्यवहार बता रहे हैं, उन विचारों को धारो और विचारयुक्त रास्ते पर आगे बढ़ते हुए अपने जीवन का विशेष लक्ष्य 'मोक्ष' पाने में

समर्थ हो जाओ। जानो संसार को धारण करने से वह लक्ष्य कभी नहीं प्राप्त होगा। उसकी प्राप्ति के लिए तो हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के पास जो इलाही रंग है, वह प्राप्त करना होगा। तभी हमारा काम बनेगा। यहाँ ज्ञात हो कि इलाही रंग और जगतीय रंग में जमीन-आसमान का फर्क होता है। जगतीय रंग से ख़्याल नीचे गिरता है और अन्धकारमय वातावरण में उलझ जाता है, पर जब इलाही रंग में इंसान रंग जाता है तो ख़्याल ऊपर उठता है। जब ऊपर उठता है तो अपने सच्चे घर में स्थित हो जाता है। अतः जो समझदार मानव ऐसा कमाल कर दिखलाता है उसके अन्दर के सब फुरने उसी वक्त समाप्त हो जाते हैं यानि उसका मन शान्त हो जाता है। जब मन शान्त हो गया तो बुद्धि तीक्ष्ण हो जाती है। मन शान्त, बुद्धि तीक्ष्ण तो चित्त प्रसन्न हो जाता है। चित्त प्रसन्न तो सजनों आत्म-दर्शन में कोई बाधा नहीं उत्पन्न होती। हकीकत में तो फुरना ही बाधा उत्पन्न करता है। इस बाधा के समाप्त होने पर इंसान अपने परमात्म स्वरूप को जान जाता है और 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़ा हो जाता है। ऐसा होने पर ईश्वर को कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं रहती। इस तरह जगत से प्राप्ति का भाव मन से समाप्त हो जाता है और मन को सन्तोष प्राप्त हो जाता है। अब जहाँ सन्तोष है वहाँ सब कुछ भरपूर होता है। जहाँ भरपूरता होती है, वहाँ धीरता और कामनामुक्ति होती है। तभी तो ऐसा इंसान निष्काम भाव से सहज ही जगत में विचरते हुए परोपकार कमाता है और जगदाता नाम कहाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने ख़्याल को पलटा खवाओ और स्वाभाविक स्वरूप में परिवर्तन लाओ। याद रखो जब आपका स्वाभाविक स्वरूप इलाही रंग में रंग गया तो आप मानव-धर्म के अनुसार पुण्यकर्म करने में समर्थ हो जाओगे। इसके विपरीत अगर ऐसा करने में असमर्थ रहे तो आप अपने धर्म के प्रतिकूल चलोगे। धर्म के विपरीत चलना, असत्य का सहारा लेने की बात होती है। ऐसे इंसान सत्य मार्ग छोड़कर असत्य मार्ग पर चलने के लिए विवश हो जाता है और मंझधार में फँस जाता है। अब झूठा तो दण्ड भुगतता ही भुगतता है। यही दुनियाँ का और कुदरत का नियम है। इस बात को समझते हुए सजनों अपने अन्दर इलाही रंग प्राप्त करने की प्रबल चाहत पैदा करो और इस हेतु अपने मन-मस्तिष्क को सदा

स्वतन्त्र रखो। यह है अपने साथ सजनता निभाना। याद रखो जो अपने साथ सजनता निभाने में समर्थ होता है केवल वही सबके साथ सजनता का भाव रखने में कामयाब होता है। इसके विपरीत जो अपना ही सजन नहीं, वह दूसरों का सजन नहीं बन पाता। आपको अपने जन्म का ऐसा वैरी नहीं बनना।

आज की बात को सजनों ध्यानपूर्वक समझना और अपने सजन बन जाना। याद रखो जीवन की घड़ियाँ अभी बाकी हैं। इस बाकी समय में अपना स्वाभाविक परिवर्तन कर यानि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारयुक्त भाव-स्वभाव त्यागकर सम, सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के निष्काम रास्ते पर आगे बढ़ते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाना और ब्रह्म नाम कहाना। बस इतना सा ही करने पर जीवन का कारज सिद्ध करना सहज हो जाएगा। अतः आप सफल होवो तथा अपने परिवार को सफल बनाओ। इस तरह कुल समाज को सफलता के रास्ते पर चढ़ाने का पुरुषार्थ दिखाओ।

इसी के साथ सभी सजनों को शुभकामनाओं सहित जय सीताराम।